मंथन समूह सफलता की कहानी...

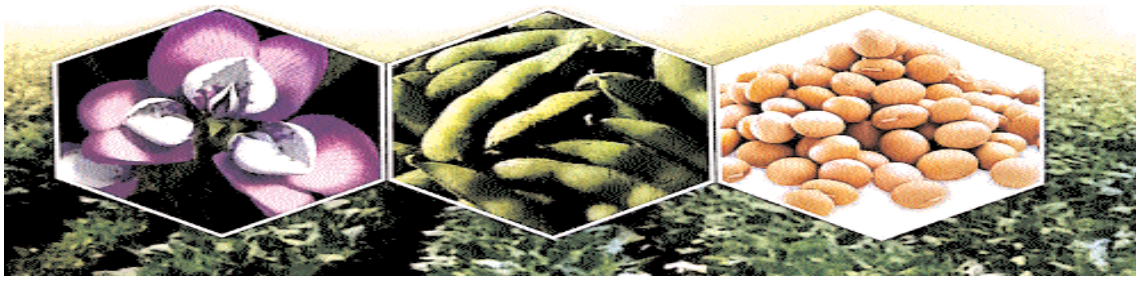

---प्रेरणादायक किसानों की सफल गाथाएं---

राजगढ़ के प्रगतिशील किसान हंसराज रावतिया ने मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवी समिति भोपाल के सहयोग तथा वैज्ञानिकों की सलाह से उचित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग कर अपनी फसल उत्पादन को बढ़ाया

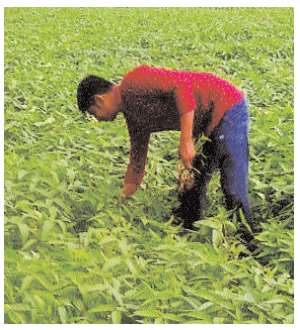

राजगढ़ के प्रगतिशील 40 वर्षीय किसान हंसराज रावतिया ने भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इन्दौर तथा मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से वैज्ञानिकों की सलाह से उचित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग कर अपनी फसल उत्पादन को बढ़ाया। नई-नई तकनीकों को अपनाने में विश्वास करने वाले हंसराज रावतिया जी को खेती करते हुए 14 वर्ष हो गए है। खेती करने के दरमियान उन्हें कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। उनकी मुख्य समस्याए थी जैसे-कीटों और बीमारिया का प्रकोप, जलवायु एवं उत्कृष्ट/उत्तम बीजों का ना मिल पाना था। वह पहले अपनी लगभग 15 एकड़ खेतों को सालों से चली आ रही पुरानी परम्परा के तरीके से करते चले आ रहे हैं। जिसमें वह हाथ से छिटक कर बुवाई करते थे। जिससे बीज की मात्रा अधिक हो जाया करती थी। जिससे उनकी लागत तथा समय मूल्य अधिक लगता था और उत्पादन सामान्य हुआ करता था। जिसमें से लागत निकालने के बाद ज्यादा बचत नहीं होती थी। उन्होंने ग्राम ब्यावरा, माण्डू में जिला राजगढ़ मध्यप्रदेश क्रियान्वित भा.कृ.अनु.पं. भारतीय सोयाबीन एवं अनुसंधान संस्थान इन्दौर में संचालित परियोजना मध्यप्रदेश के आठ आंकाक्षी जिलों में बायोटेक किसान हब की गतिविधियों का विस्तार चरण -2 के माध्यम एवं मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से डीबीटी बायोटेक किसान हब परियोजना के बारे में जानकारी प्राप्त कर तथा प्रभावित होकर उन्होंने परियोजना के साथ जुड़कर कार्य करना आरम्भ किया।

हंसराज रावतिया जी परियोजना के बाद खेती करना प्रारंभ किया और उन्होंने भूमि की गहराई, जुताई, मिट्टी परीक्षण, खरपतवार नियंत्रण, समय पर कीट एवं रोगनाशक दवाओं का छिड़काओ समय-समय पर निगरानी व देखरेख भी की। हंसराज रावतिया ने इस वर्ष अपने खेतों में सोयाबीन की फसल लगाई है। मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से डीबीटी बायोटेक किसान हब परियोजना से जुड़ने के बाद आधुनिक पद्धति के तरीके से खेती के बारे में जागरुक करते हुए नए-नए तरीकों से परिचय कराया। जिसमें उच्च पैदावार वाले बीज की जानकारी, उसकी सही मात्रा, उचित समय पर देखरेख समय-समय पर कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा परीक्षण प्रदान कराया। पौधों से पौधों की अनुचित दूरी तथा बोनी पूर्व अंकुरण परीक्षण आधार पर बीज दर को अपना कर उन्होंने बीज की बरबाद को भी कम किया। उन्होंने उन्नत किस्म का बीज कीटनाशक दवाईयां एवं अनुसंसित मात्रा में उर्वरकों के उचित प्रयोग करने से उनके खेत में खरपतवारों का प्रकोप भी अपेक्षाकृत कम है। उन्होंने इन परियोजना के माध्यम से सोयाबीन की वैज्ञानिक खेती के बारे में विशेषज्ञों से जानकारी प्राप्त कर नवीन तकनीकों का अपनाकर अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया।

रोजगार

मंथन पॉलीटेक्निक कॉलेज

इंदौर-भोपाल हाईवे पुलिस चौकी के पास अमलाहा सीहोर, (म.प्र.)

(एआईसीटीई, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित)

पॉलिटेक्निक (डिप्लोमा इंजीनियरिंग)

इलेक्ट्रिकल (इंजी.) (E.E.)
सिविल (इंजी.) (C.E.)
मैकेनिकल (इंजी.) (M.E.)
कंप्यूटर साइंस (इंजी.) (C.S.E.)
इलेक्ट्रॉनिक एवं टेली कम्यूनिकेशन (इंजी.) (E.C.E.)

- : विशेषताएं :-

- शत् प्रतिशत रोजगार के सुनहरे अवसर।
- सुव्यवस्थित वर्कशॉप तथा आधुनिक मशीनों पर कार्य करने का अवसर।
- उत्तम गुणवत्ता का प्रशिक्षण।
- छात्रों को भविष्य निर्धारित करने का मौका।
- न्यूनतम शुल्क पर छात्रावास की सुविधा।

न्यूनतम योग्यता: 10वीं/12वीं कक्षा उत्तीर्ण

छात्रवृत्ति

- अल्पसंख्यक/अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं की सुविधा।
- अल्पसंख्यक वर्ग की छात्रवृत्ति के लिए 10वी/12वीं में 50 प्रतिशत अंक आवश्यक।

प्रदेश की एकमात्र संस्था जो प्रशिक्षण के उपरांत 100% रोजगार प्रदान करती है

अपना उज्जवल भविष्य निर्धारण करने के लिए सम्पर्क करें : मंथन पॉलिटेक्निक कॉलेज-मो.623200930

वैज्ञानिक पद्धति से खेती करके शिवशंकर वैद्य को अच्छा उत्पादन प्राप्त हुआ, लागत निकालने के बाद काफी बचत हुई

मध्य प्रदेश के खंडवा जिले के ग्राम खिड़गाँव के के 45 वर्षीय प्रगतिशील किसान शिवशंकर वैद्य खेती पर ही निर्भर हैं। सभी तरह की फसलों को लगाते हैं। इनका परिवार और ये स्वयं भी खेती पर ही निर्भर रहते हैं। इनके पास में 05 एकड़ भूमि है। जिसमें कुछ हिस्सा सोयाबीन और मक्का का भी लगाते हैं और नई-नई तकनीक पर ध्यान देते हैं। शिवशंकर वैद्य जी अपनी खेती पुरानी तकनीक से करते थे। जिससे उन्हें अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। उनकों उन्नत किस्मों के बीज नहीं मिल पा रहे थे। इनके खेत में खरपतवार की समस्या ज्यादा थी। खेतों में मक्के के अंदर कीटों का भी प्रकोप ज्यादा होता था। जिससे इनकी खेती की लागत ज्यादा हो रही थी। फसल उत्पादन सामान्य हो रहा था। लागत निकालने के बाद में इनको बचत कम हो रही थी। वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में सोयाबीन की नवीनतम प्रजातियों के उपयोग, सही रूप से बीजोपचार, अनुसंशित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग तथा खरपतवार, कीटों एवं बीमारियों का सही समय पर प्रबंधन से अपनी फसल की उत्पादकता को बढ़ाया है। भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इन्दौर तथा मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से इन्होंने ग्राम खिड़गाँव जिला खंडवा मध्यप्रदेश में क्रियान्वित भा.कृ.अनु.पं. भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान मध्य प्रदेश के आठ आकांक्षीय जिलों में बायोटेक किसान हब की गतिविधियों का विस्तार चरणों के माध्यम एवं मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से डीबीटी बायोटेक किसान हब परियोजना के बारे में जानकारी प्राप्त कर तथा प्रभावित होकर उन्होंने परियोजना के साथ जुड़कर वैज्ञानिक तकनीक के बारे में जानकारी हासिल की। वैज्ञानिकों की मदद से वैज्ञानिक तकनीक का इस्तेमाल करके बीज की मात्रा को कम किया। जिससे लागत तो कम हुई तथा उत्पादन ज्यादा हुआ। उचित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग कर अपनी फसल उत्पादन को बढ़ाया।

शिवशंकर वैद्य ने इस बार मक्का की फसल लगाई है। इसमें गहरी जुताई, मिट्टी परीक्षण, खरपतवार नियंत्रण, रोग, कीटों से रोकथाम तथा उर्वरक को नियमित मात्रा में चयन किया गया। इसमें पौधे से पौधे की दूरी और उन्नत किस्म के बीज का चयन किया गया। बुआई से पूर्व में अंकुरण कर बीज की उचित मात्रा का उपयोग किया गया। मंथन ग्रामीण समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से डीबीटी बायोटेक किसान हब परियोजना से जुड़ने के बाद आधुनिक पद्धति के माध्यम से नई पद्धति से परिचय कराया। जिसमें पैदावार वाले उन्नत किस्म के बीज की जानकारी प्राप्त की गई। कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा समय-समय पर तकनीक बताई गई और बीज व पानी बरबादी कम किया गया। इस वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने के बाद से शिवशंकर वैद्य जी को अच्छा उत्पादन प्राप्त हुआ। उन्होंने लागत निकालने के बाद में उनको काफी बचत हुई। पहले शिवशंकर वैद्य जी को मक्का की खेती 5-6 क्विंटल प्रति एकड़ हो रही थी। लेकिन नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक का इस्तेमाल करने के बाद में 10-15 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन हुआ।

मंथन ग्रामीण समाज सेवा समिति भोपाल के सहयोग से डीबीटी बायोटेक किसान हब परियोजन से लाभ प्राप्त कर आने वाले समय में गांव के बहुत से किसान वैज्ञानिक पद्धति को अपनाकर खेती करेंगे। जिससे अधिक लाभ मिलेगा सभी किसानों को।